

# TDC PART I HISTORY (HON) PAPER I

अनिल कुमार

इतिहास विभाग, अरुन्धीजी आर  
कॉलेज - महाराजगंज (बिहार)

## मध्य पाषाण काल (MESOLITHIC AGE) (शेष भाग)

06 NOVEMBER  
TUESDAY  
WEEK-45 310-055

NOVEMBER 02

इस काल में जीवन से अलग (अर्थात्) मृत्यु के पश्चात् जीवन के संबंध में भी विचार बनने लगे थे तभी तो विभिन्न स्थानों पर खुदाई के उपरांत मिले प्रमाणों से सिद्ध होता है कि इनका पूर्ण विश्वास था कि मनुष्य को मृत्यु के पश्चात् भी उपकरणों एवं आभूषणों की आवश्यकता हो सकती है इसलिए शवों के पास इन वस्तुओं को प्रयोग के लिए रखा जाता रहा होगा। शवधानों के निर्माण में पाई जाने वाली एकलपता स्पष्ट काली है कि सूर्यास्त तथा सूर्योदय से तथा सूर्य की जीवनदायिनी शक्ति से प्रभावित होकर इन लोगों ने धार्मिक अनुष्ठान भी प्रारम्भ कर दिये थे। इसी कारण शवधान पश्चिमी-पूर्व अथवा पूर्व-पश्चिम दिशा के अनुसार किये जाते थे।

इस काल की संस्कृतियों को दस भागों में विभाजित किया जा सकता है - ① पश्चिमी क्षेत्र, ② दक्षिणी क्षेत्र ③ मध्य क्षेत्र, ④ पूर्वी क्षेत्र, ⑤ उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र ⑥ मध्य गंगा घाटी। कहीं-कहीं उपरोक्त स्थानों में इस संस्कृति के विस्तृत अवशेष प्राप्त हुये हैं।

इस काल के हथियारों को व्यवहार में लाने के लिए इन्हें लकड़ी के हथों या हड्डी के हथों में नियत किया जाता था। लघु पाषाणोपकरण दो प्रकार के होते थे - अज्यामितिक लघु-पाषाणोपकरण तथा ज्यामितिक लघु-पाषाणोपकरण। इसी समय प्रक्षेपास्त्र -

तकनीक (लीर-धनुष) का भी विकास हुआ। इस समय के हथियारों में प्रमुख थे - इकछा फलक (Beaked Blade) वेपनी (Pointo), अर्द्धचन्द्राका (Punate) तथा समलम्ब (Trapeze)।

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण के उपरांत निष्कर्षित यह कहा जा सकता है कि मध्यपाषाण कालीन संस्कृति में अनेक नये तत्व देखने को मिलते हैं। जनसंख्या की वृद्धि और आखेट की सुगमता से मनुष्य अब छोटी-छोटी लेलियों में रहने लगा। स्थायी निवास की परम्परा निकली, पशुपालन एवं कृषि की शुरुआत हुई, मिट्टी में बरतन बनने लगे। बागौर से शवों को सुनियोजित ढंग से दफनाने की विधि का पता चलता है। सराय नाहर राय और महादहा से स्थायी मोपड़ियाँ बनाकर रहने का आन्दाज लगता है। सरायनाहर राय से मानवीय आक्रमण या युद्ध का भी प्रमाण मिलता है। यह युद्ध सम्भवतः व्यक्तित्व सम्पत्ति के चलते हुआ। विंध्याचल की गुफाओं और शौलाश्रयों से शिकार युद्ध एवं वृत्त के चित्र मिले हैं। भोजन पकाने के लिए चुल्हा बनाये जाने लगे। इस प्रकार इसी युग में पशुपालन एवं आरम्भिक कृषि का विकास हुआ तथा स्थायी आवास बनाये जाने लगे। मध्यपाषाण युग भारत में करीब 4000 वर्ष पूर्व तक बना

रहा

८

✉